स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़

मानव्य विद्या कला संकाय अंतर्गत विद्या वाचस्पति हिंदी

उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोध का विषय–

“हिंदी.–मराठी आत्मकथाओं में स्त्री चेतना”

(विशेष संदर्भ रमणिका गुप्ता तथा उर्मिला पवार)

शोधार्थी,

मनिषा तुकाराम कांबळे

शोध निर्देशक,

डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे

स्नातकोत्तर हिंदी विभागाध्यक्ष,प्रोफेसर तथा शोधनिर्देशक,

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

तहसील उदगीर जिला लातूर 413517

अनुसंधान केंद्र,

हिंदी विभाग, महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

अगस्त 2024

"हिंदी.—मराठी आत्मकथाओं में स्त्री चेतना"

(विशेष संदर्भ रमणिका गुप्ता तथा उर्मिला पवार)

1. **भूमिका—**

हिंदी साहित्य में आत्मकथा विद्या काफी पुरानी है। आत्मकथा लेखन जोखिम भरा कार्य है। लेखक अपने जीवन की उन घटनाओं कों साहित्यिक असली जामा पहना कर गौरवान्वित एवं आनंदित महसूस करता है। जो जीवन में उसने भोगे है। आत्मकथा अपने जीवन की सच्ची घटनाओं पर आधारित होती है, जो वह समाज के सामने प्रस्तुत करती है।

आत्मकथा लेखक के जीवन की उन घटनाओं और पहलुओं को वर्णन करता है, जो लेखक के जीवन का कड़वा सच होता है। जो वह साहित्य के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत करता है। हिंदी साहित्य में इसवी सन 18वीं शताब्दी से बनारसीदास द्वारा 'अर्थकथानक' यह पहली आत्मकथा मानी जाती है।

स्त्री आत्मकथाओं में लेखकों ने अपने जीवन की यात्रा, दुख, दर्द, पीड़ा, भूख, प्यास आदि घटनाओं का वर्णन को उजागर किया है। साथ ही अपने समाज में रहने वाले उन लोगों के दुख, दर्द, पीड़ा, गरीबी तथा सब वर्णों द्वारा किए जाने वाले शोषण आदि को भी प्रस्तुत किया गया है। आत्मकथा में भोगे हुए जीवन का यथार्थ चित्रण किया जाता है। अन्य विधाओं की तुलना में आत्मकथा प्रामाणिक मानी जाती है।

हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने स्त्री जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री जीवन की अनछुए समस्याओं को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। हिंदी साहित्य में पुरुष लेखकोने विविध विधाओं में स्त्री जीवन का चित्रण तो किया ही है, परंतु स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री की

पीड़ा, त्रासदी, संत्रास को सशक्त रूप में अभिव्यक्त किया है। स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री की घुटनभरी जिंदगी को पहली बार मुखरित किया है।

हिंदी साहित्य में विविध विधाओं में लेखन हुआ है। उनमें आत्मकथा लेखन में स्त्री की संवेदना को, उसके भाव विश्व को, विश्वसनीयता के साथ उजागर किया है। हिंदी में आत्मकथा विधा में देर से ही सही लेकिन स्त्रियों की अनुभूति की अभिव्यक्ति पाठक के रूप में आई है। इन आत्मकथाओं में स्त्री जीवन की संघर्ष गाथा है। आत्मकथाओं के माध्यम से स्त्रियों की अंतर्मन की व्यथा, वेदना, पीड़ा को अभिव्यक्त करने का अवसर मिला।

भारतीय समाज व्यवस्था में नारी मनुष्य की अपेक्षा कठपुतली रही। पुरुषों ने उसे गुलाम बनाकर, उनकी भावनाओं का दमन किया। अपनी इच्छा अनुसार उसका इस्तेमाल करता रहा। वह रौदी गई, कुचली गई। इन आत्मकथाओं में असफल प्रेम विवाह, दांपत्य संबंध, विच्छेद, टूटता परिवार, वर्ग–वर्ण कृत संस्कार आदि कई प्रश्नों को स्वर्ण अनुभूतियों के आधार पर व्यक्त किया गया है।

तुलना मानव की सहज प्रवृत्ति है। तुलना विकसित मस्तिष्क की पिपासा से परिमित ज्ञान यात्रा है। मानक हिंदी कोश में तुलना शब्द के अर्थ निम्नलिखित रूप में दिए गए हैं। जैसे कांटे तराजू आदि पर रखकर तौला जाना। या फिर तो या दो से अधिक वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक दूसरे से घट या बढ़कर होने का विचार को तुलना कहते हैं।

तुलनात्मक शब्द को और भी गहराई से देखा गया तो जिसमें दो या कई चीजों के गुना की समानता और असमानताएं दिखलाई जाती है। जिसमें किसी के साथ तुलना करते हुए विचार किया गया हो।

किसी विषय के सब अंगों या गुण, तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे देखने, समझने तथा पढ़ना। इन शब्दों को ज्ञात करने से तुलना का सरस एवं व्यावहारिक अर्थ है– ''किन्हीं दो वस्तुओं या व्यक्तियों का गति पर सामान गुन के आधार पर पूर्णतः जानने के लिए परिक्षण को ही तुलना कहते हैं।''

तुलना शब्द उपरोक्त सरल अर्थ से हटकर शोध के क्षेत्र में एक विशिष्ट, निश्चित एवं संकुचित अर्थवाची हो गया है। तुलना करते समय किन्हीं दो वस्तुओं में शत प्रतिशत तुलना सामान्य संभव नहीं है। अतः तुलना में कुछ विषमता और समानता एवं विपरीतता भी सहज आती है। वह समय मूलक अध्ययन से भी तुलनात्मक अध्ययन का एक अंग है।

तुलनात्मक अध्ययन के अंतर्गत किन्हीं दो समकालीन या विषमकालीन समान गुणात्मक प्रतीत होने वाली कृतियों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन दो युगों, दो भाषाओं एवं दो व्यक्तियों का भी हो सकता है।यह अध्ययन गंभीर वैज्ञानिक, तटस्थ,सांगोपांग एवं निष्कर्ष मूलक होता है।

हिंदी मराठी दोनों भाषाओं के आत्मकथाओं की तुलना करते हुए मैने हिंदी लेखिका रमणिका गुप्ता की दो आत्मकथाएँ ली है। एक – हादसे जिसका प्रकाशन वर्ष 2005 है, इसी आत्मकथा की दूसरी कडी आपहुदरी है, जिसका प्रकाशन वर्ष 2016 है। साथ ही मराठी भाषा की दलित लेखिका उर्मिला पवार की आत्मकथा आयदान जिसका प्रकाशन 2003 में हुआ है।

इन दोंनों आत्मकथाओं में समानताएॅ इस प्रकार है–

1. दोंनों आत्मकथाएॅ महिलाओं व्दारा लिखी है।
2. दोंनो आत्मकथाओं में स्त्री की व्यथा, दूख,दर्द, पीडा का चित्रण हुआ है।
3. दोनों आत्मकथाएॅ समकालीन है।
4. दोंनो आत्मकथाओं की लेखिकाएॅ सामाजिक जीवन से जुडी हुई है।
5. दोंनों भाषिक लेखिकाओं ने अपने समय के सामाजिक, राजनितिक पक्ष को उजागर किया है।
6. दोंनों भाषिक लेखिकाएॅ पूरूषी मानसिकता पर प्रहार करती है।
7. दोंनों भाषिक लेखिकाओ ने स्त्री चेतना का चित्रण हुआ है।
8. दोनों भाषिक लेखिकाएॅ अपने अनुभवों को व्यक्त करते हुए समतामूलक समाज की स्थापना चाहती है।
9. दोनों भाषिक लेखिकाओं की प्रेरणा अंबेडकरी विचारधारा है।
10. दोनों लेखिकाओं ने अपने अपने प्रांतों ,समाज के अनुसार भाषिक प्रयोग किया है।
11. रमणिका गुप्ता आदिवासी आंदोलन से जुडी है, तो उर्मिला पवार दलित जीवन से।

विषमताएॅ –

1. दोनों लेखिकाएॅ अलग–अलग प्रातों,भाषाओं से है।
2. रमणिका गुप्ता के अनुभव सामाजिक तथा राजनितिक जीवन के है, तो उर्मिला पवार के अनुभव केवल सामाजिक जीवन से है।
3. उर्मिला पवार को जातिगत अपमान सहना पडा। वह रमणिकाजी को नही।

4. उर्मिला पवार को गरीबी,अभावग्रस्त जीवन का सामना करना पडा। रमणिकाजी का बचपन अच्छे परिवार मे बीता।

हादसे आत्मकथा में जीवन की विसंगतियों का चित्रण हुआ है। इसमें लेखिका विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उभरकर आती है। सामाजिक जीवन और राजनितिक जीवन में पुरूषी मानसिकता, पुरूषों का महिलाओं को एक देह के रूप में देखना, लैगिक शोषण आदि का चित्रण हुआ है। साथ ही मजदूर यूनियन नेता से लेकर बिहार विधान परिषद की सदस्य बनने तक का सफर में जो घटनाएँ , हादसे महत्वपूर्ण रहे, उसका सिलसिलेवार वर्णन किया गया है। इस आत्मकथा में रमणिकाजी के सामाजिक,राजनितिक जीवन का वृतांत है।

आपहुदरी रमणिका गुप्ता की एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा है। इसमें रमणिका गुप्ता आपहुदरी से पहले अपनी आत्मकथा के पहले खंड हादसे को लेकर चर्चित रही है। जिसे एक वरिष्ठ साहित्यकार ने एक जिद्दी महिला, राजनीतिक कार्यकर्ता की कथा कहा था। अब उन्होंने अपने जीवन के अंतरंग प्रसंगो के इर्द–गिर्द जो कुछ बुना है। उसे एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा कहकर आपहुदरी नाम से प्रकाशित किया है।

आपहुदरी का समय बहुत लंबा है और भूगोल विशाल। अब वह अपनी उम्र के 86 वर्ष में है और इस पुस्तक में उन्होंने 1970 तक के अपने अंतरंग क्षणों का जिक्र किया है । उस समय उनकी उम्र 40 साल की ठहरती है। इस तरह उनकी उम्र के लंबे हिस्से का विवरण छपना बाकी है। जिसके दिल और दिलचस्प होने की असर है। रमणिका गुप्ता ट्रेड यूनियन से जुड़ी कार्यकर्ता रही है। लेकिन उनके जीवन की अपनी खोज सत्ता तक पहुंच कर अपनी उपस्थिति का एहसास करना भरना था। बल्कि वह खुद की आकांक्षा के बारे में इसी आत्मकथा में कहती है–" मैं सब परिधियां बांध सकती थी, सीमाएं तोड़ सकती थी। सीमाओं में रहना मुझे हमेशा कचोटता रहा है, सीमा

तोड़ने का आभास मुझे अत्यधिक सूखकारी लगता है। मैं वर्जनाएं तोड़ सकती हूं ... .अपनी देह कि मैं खुद मालिक हूं ...मैं संचालक हूं. संचालित नहीं।"

इस पूरी आत्मकथा में रमणिका एक जिद्दी लड़की की भूमिका के साथ स्त्री की कामना की स्वतंत्र अभिव्यक्ति की खोज में निकल पड़ती है। वह जहां–जहां जाती है वहां उनके संबंध बनते चलते हैं... कहीं भी वे छली नहीं जाती। लेकिन अपने इन संबंधों के बारे में जब भी लिखती है, तो पुरुष प्रधान समाज के तिलिस्म को रेशा रेशा कर डालती है। वह अपने अनुभव का बखान इन शब्दों में व्यक्त करती है –"यौन के बारे में भक्ष–अभक्ष क्या है। समाज इसका फैसला तो करता है। पर उसने समझ के साथ अपने मानदंड नहीं बदले। व्यक्ति बदलता रहा, प्यार की परिभाषाएं, सुख की व्याख्या,यौन का दायरा, सब तो देश काल के अनुरूप बदलता है। रिश्ते भी सापेक्ष होते हैं। दुर्भाग्यवश समाज ने अपना दृष्टिकोण नहीं बदला। खासकर भारतीय समाज ने।"।

इस भारतीय समाज के जिन पुरुषों से रमणिका गुप्ता का साबका पड़ता है। उनमें उसका पति, पति के दोस्त, नेता के साथ चलने वाले छुटभैए है। ओहदेदार पुरुषों की लंबी फेहरिस्त है।

आपहुदरी से गुजरते हुए यह साफ महसूस होता है कि सेक्सुअलिटी की खोज उत्सवधर्मिता में तब्दील होती है। पूरी आत्मकथा में स्त्री का दैन्य कहीं नहीं है। जहां हादसे में बोल्डनेस के बावजूद एक राजनीति विमर्श भी साथ चलता है। वही आपहुदरी मे रमणिका गुप्ता अंतरंगता के विमर्श मे भिन्न–भिन्न आयामों की पड़ताल कर स्त्री को अपने बदन का खुद मुख्तार बनाने की राहत तैयार करती है। पिछले 10 साल में प्रकाशित स्त्री लेखन की आत्मकथाओं की कुड़ियां से ही आत्मकथा नहीं जुड़ती। क्योंकि उन्होंने लेखिकाओं ने अपना विपुल समय साहित्य रचना को भी दिया है।

रमणिका ने हिंदी की सेवा एक सामाजिक कार्यकर्ता की तरह की है, लेकिन अंततः यह पूरी किताब उनकी अपनी निजी यात्रा है। इसमें समाज कहीं पीछे छूट रहा गया है। लेकिन यह पठनीय है तो है ही, इसके अलावा एक निर्भीक स्त्री ने अपने जीवन की अंतरंगताओं को बेहद बोल्ड नजरिया से पेश किया है।

उर्मिला पवार की आत्मकथा **आयदान** का प्रकाशन इसवी सन 2003 में हुआ। आयदान में महाराष्ट्र की कोंकण क्षेत्र की महार जाति की पृष्ठभूमि ग्रहण करते हुए अपने और महार समुदाय के जीवन के विषय में उन्होंने लिखा है। उनके समुदाय के लिए आजीविका का मुख्य आधार है। आयदान का अर्थ है बॉस की टोकरी। उर्मिला बॉस की टोकरी बनाने की तकलीफ को अपनी आई (मां) के जीवन संघर्ष से जोड़ती है।

आत्मकथा का शीर्षक रखती है आयदान। आत्मकथा लेखन की प्रेरणा स्वरूप में वह उन स्त्रियों को याद करती है, जिनकी दैनदिन जीवन संघर्षों, बातचीत, रहन–सहन ने उर्मिला के अवचेतन मन का निर्माण किया है।

उर्मिला पवार की आत्मकथा आयदान में अपने जीवन संघर्षों और चुनौतियों का जिस तरह मुकाबला किया। वह केवल उन्हीं की नहीं बल्कि हर उस स्त्री की जीवन कथा है, जो जाति उत्पन्न के साथ–साथ पुरुष सत्ता का शिकार होती रही है। उर्मिला पवार ने कहा है। " इस पुस्तक को मेरे मेरे कन्फेक्शन के रूप में नहीं एक दलित स्त्री के जीवन के आकलन के रूप में देखा जाए तो यह पुस्तक के प्रति ज्यादा न्याय होगा।" बाबासाहब आंबेडकर की प्रेरणा से लेखिका उच्च शिक्षा ग्रहण करती है। अपने और अपने परिवार के शोषण का विरोध करती है। वह स्वावलंबी बनती है। उसमे स्वाभिमान जागता है, उसमें चेतना जगती है।

इस गंभीर विषय को मस्तिष्क में रहकर ही मैने हिंदी मराठी आत्मकथाओं में स्त्री चेतना (विशेष संदर्भ रमणिका गुप्ता उर्मिला पवार) का अध्ययन करना तय किया है।

२ विषय चयन की प्रेरणाः

एम, ए, द्वितीय वर्ष के प्रकल्प लेखन के लिए मुझे रमाणिका गुप्ता की हादसे आत्मकथा प्रकल्प के लिए विषय लिया था। इस आत्मकथा में स्त्री व्यथा का चित्रण स्पष्ट हुआ है। जीवन की तमाम विसंगतियों विपरीत परिस्थितियों से जुड़ी थी लड़ती और उसे उभरती एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में रमणिका गुप्ता को अनुभव किया है। इस आत्मकथा को पढ़कर मैं अत्यधिक प्रभावित हुई। लेखिका मजदूर यूनियन नेता से लेकर बिहार विधान परिषद की सदस्य बनने तक का सफर इस आत्मकथा में रेखांकित करती है। इस सफर में जो घटनाएं जो हादसे होते हैं, उसका सिलसिलेवार वर्णन लेखिका ने बड़ी प्रामाणिकता के साथ किया है। इसमें लेखिका के राजनीतिक और सामाजिक जीवन का वृतांत चित्रित हुआ है। इसके साथ ही बी.ए. तृतीय वर्ष को मैंने उर्मिला पवार की आयदान आत्मकथा पाठ्यक्रम में होने के कारण पड़ी थी।

पीएच.डी. के लिए जब मैं मार्गदर्शक बुकतरे सर से चर्चा करने लगी। तब उन्होंने 'हिंदी और मराठी आत्मकथा में स्त्री चेतना' विशेष संदर्भ में रामाणिका गुप्ता और उर्मिला पवार यह विषय चयन करने की अनुमति दी ।

शोध कार्य का महत्व एवं उद्देश्यः

मेरी शोध कार्य का उद्देश्य यह है कि हिंदी आत्मकथा में स्त्री चेतना बताते हुए महिलाओं की पीड़ा, घुटन, त्रासदी, समस्याओं से पाठकों को परिचित कराकर उन्हें मनुष्यता प्रदान करना रहा है। इस शाोध कार्य के निम्न उद्देश्य रहे हैं—

४.महिलाओं की समस्याओं को व्यक्तिगत भाव भूमि से ऊपर उठकर सामाजिकता के स्तर तक पहुंचाना।

२. दलित और स्वर्ण महिलाओं की त्रासदी उनके जीवन तथ्य को परखना।

४.हिंदी मराठी महिला आत्मकथाओं के योगदान को स्पष्ट करना।

४. महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक जीवन संघर्ष को उजागर करना।

५. महिला आत्मकथा के माध्यम से महिलाओं की भाषा, उनके स्वर अनुभूति को समाज के सम्मुख व्यक्त करना।

४. अनुसंधान पद्धतियांः

ज्ञान का कोष इतना विस्तृत है कि इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए मैंने उसे छोटे–छोटे भागों में विभाजित कर ज्ञान ग्रहण करने का प्रयास किया है। इसलिए शोध कार्य की व्यापकता को देखकर निम्न प्रकार के अनुसंधान पद्धतियों का सहारा लिया है।

जैसे – अध्ययन अध्यापन पद्धती,सर्वेक्षण पद्धति, प्रयोगात्मक पद्धति, पूर्व अनुसंधान व्यक्ति से साक्षात्कार तथा प्रश्नावली पद्धति,निष्कर्ष पद्धति आदि।

५. शोध कार्य की रूपरेखाः

हर शोध विषय की अपनी सीमा होती है शोध विषय को सुचारू और सुनियोजित रूप से कार्य किया जाए तो अनुसंधान कार्य में सरलता एवं स्तरीयता आ जाती है अध्ययन की सुविधा और विषय की व्यापकता को देखकर मैंने अपने शोध प्रबंध –

हिंदी मराठी आत्मकथाओं में स्त्री चेतना

विशेष संदर्भ रमणिका गुप्ता और उर्मिला पवार को लेकर निम्नांकित साथ अध्याय में विभाजित किया है।

पहला अध्याय– **आत्मकथा, स्वरूप एवं विकास**

1.1 आत्मकथा शब्द की व्युत्पति

1.2 आत्मकथा का अर्थ

1.3 आत्मकथा का स्वरूप

1.4 आत्मकथा की परिभाषा

1.5 आत्मकथा के तत्व

1.6 आत्मकथा की उपयोगिता

1.7 आत्मकथा का महत्व

1.8 आत्मकथा की प्रेरणा

निष्कर्ष –

दूसरा अध्याय –**हिंदी मराठी आत्मकथाओं का उद्‌भव एवं विकास**

2.1 हिंदी आत्मकथा का उदभव, विकास

2.2 मराठी आत्मकथा का उदभव, विकास

निष्कर्ष –

तीसरा अध्याय– **रमाणिका गुप्ता एवं उर्मिला पवार का व्यक्तित्व, कृतित्व**

3.1 रमणिका गुप्ता का व्यक्तित्व,

3.2 रमणिका गुप्ता का कृतिव

3.3 उर्मिला पवार का व्यक्तित्व,

3.4 उर्मिला पवार का कृतित्व

चौथा अध्याय –**हादसे, आपहुदरी एवं आयदान आत्मकथा का कथ्य अध्ययन**

4.1 हादसे आत्मकथा की कथावस्तु

4.2 आपहुदरी आत्मकथा की कथावस्तु

4.3 आयदान आत्मकथा की कथावस्तु

निष्कर्ष –

पांचवा अध्याय– **हादसे,आपहुदरी एवं आयदान आत्मकथा में स्त्री चेतना**

5.1 हादसे आत्मकथा में स्त्री चेतना

5.2 आपहुदरी आत्मकथा में स्त्री चेतना

5.3 आयदान आत्मकथा में स्त्री चेतना

निष्कर्ष –

छठा अध्याय– **हादसे, आपहुदरी एवं आयदान आत्मकथा का शिल्पगत अध्ययन**

6.1 हादसे आत्मकथा में शिल्प विधान

6.2 आपहुदरी आत्मकथा में शिल्प विधान

6.3 आयदान आत्मकथा में शिल्प विधान

निष्कर्ष –

संदर्भ–

1. रमणिका गुप्ता, हादसे आत्मकथा,राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,2010
2. रमणिका गुप्ता, आपहुदरी आत्मकथा, सामायिक प्रकाशन,2016
3. उर्मिला पवार, आयदान आत्मकथा,ग्रंथाली प्रकाशन, पुणे
4. उर्मिला पवार, आयदान आत्मकथा,हिंदी अनुवाद, वाणी प्रकाशन,दिल्ली
5. संपादक, प्रतिभा येरेकर, हिंदी का आत्मकथा साहित्य, विकास प्रकाशन, कानपुर
6. सुमन राजे,हिंदी साहित्य का आधा इतिहास,
7. संपादक, राजेंद्र यादव,हंस पत्रिका,

शोधार्थी

मनीषा तुकाराम कांबले

R.R.C member

डॉ. रणजीत जाधव
एम.ए.पी एच.डी.
शोध निर्देशक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
कै. व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय
बाभळगांव ता.जि.लातूर

शोध निर्देशक,
डॉ. बलिराम संभाजी भुकतरे

डॉ.बी.एस.भुकतरे
शोधनिर्देशक,
हिन्दी भाषा एवं साहित्य अनुसंधान केन्द्र
महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय,उदगीर
जि.लातूर - ४१३५१७

Scanned with OKEN Scanner